कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक, हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट I

हिन्दी साहित्य का आदिकाल।

आदिकाल इस काल के साहित्य पर प्रत्यक्ष रूप से आकृतिमूलक प्रभाव पड़ा है। सैद्धान्तिक प्रभाव परम्परागत रूप से प्रस्तुत साहित्य पर पड़ा। कहने का तात्पर्य यह है कि इस काल के साहित्य पर आकृतिमूलक प्रभाव की अधिकता है। और ऐसा होना स्वाभाविक था क्योंकि उस समय की परिस्थितियां ही कुछ ऐसी थीं। अस्तु, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदिकाल की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हैं। वस्तुतः छंद, काव्यरूप, काव्यगत रूढ़ियों और वक्तव्य वस्तु की दृष्टि से 10वीं से 14वीं शताब्दी तक का लोकभाषा का साहित्य परिनिष्ठित अपभ्रंश में प्राप्त साहित्य का ही बढ़ाव है यद्यपि इसकी भाषा उक्त अपभ्रंश से थोड़ी भिन्न है। किन्तु इस संबंध में यह स्मरण रखना होगा कि आदिकालीन साहित्य पर अपभ्रंश का यह प्रभाव प्राकृतों के माध्यम से संस्कृत साहित्य से ही आया है आदिकाल के साहित्य में चरितात्मक नीति धर्म, योग और प्रेमात्मक काव्यों पर निश्चित रूप से अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव है। किन्तु उक्त समुची काव्यात्मक प्रवृत्तियाँ संस्कृत साहित्य में ही देखी जा सकती है और संभव है कि संस्कृत साहित्य की ये सभी

प्रवृत्तियों परम्परा से आदिकाल साहित्य तक पहुंची। इस काल में रासो ग्रंथो की पर्याप्त प्रणयन हुआ है। विद्वानों ने रासो शब्द का संबंध रासक छंद तथा नृत्य गीतात्मक काव्य से जोड़ा है। काव्य निर्माण का यह प्रकार पहले से ही प्रचलित था। अपभ्रंश का दोहा या दूधा छंद संस्कृत के मात्रिक छंद आर्या से प्रवृत्त मिलता है। पृथ्वी राज रासो की शैली सर्वथा पुरातन है और कदाचित इसी कारण उसकी प्रमाणिकता भी यत्किंचित विश्वसनीय हो जाती है इस काल में रचित बहुत से रासो काव्यों पर संस्कृत महाकाव्यों के लक्षण पूरे उतरते है जैनों के धर्मासिक्त शृंगार काव्यों तथा जैनेतर शृंगार काव्यों में शृंगारधारा का बहुत कुछ रूप संस्कृत काव्यधारा के अनुरूप है।

विद्यापति संस्कृत, अपभ्रंश और मैथली भाषा के एक सफल कवि कहे जा सकते है इनकी भाषा और शैली पर संस्कृत का प्रभाव सर्वविदित है जहां इनकी भाषा संस्कृतगर्भित है वहां उस में संस्कृत की सरलता और कोमलता आदि के गुण भी विद्यमान है। विद्यापति स्वयं संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। उन्होंने अपने आश्रयदाता के लिए भागवत और काव्यप्रकाश की टीकाएं लिखी

है उनकी कुछ रचनाएँ संस्कृत और मैथली भाषा में है। विद्यापति की पदावली की शैली और विषय पर संस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव के 'गीत गोविन्द' की स्पष्ट छाप है जयदेव और विद्यापति दोनों ने राधा-कृष्ण की शृंगारात्मक लीलाओं का उन्मुक्त चित्रण किया है इसके अतिरिक्त इस काल में रचित संदेश-रासक और बीसलदेव रासो आदि प्रेमात्मक काव्य संस्कृत के प्रेम प्रधान काव्यों से प्रचुर रूप से प्रभावित है। इस काल के नीति, उपदेश तथा धर्म संबंधी काव्यों पर भी संस्कृत साहित्य का प्रभाव है।

इस काल में रचित सिद्ध साहित्य में प्रतिपादित शून्य संस्कृति के बौद्ध दर्शन से प्रभावित है। दृष्टिगोचर होता है। आगे चलकर वाममार्गी साहित्य में जो मैथुन, मैदिर आदि पांच मकारों का वर्णन मिलता है वह कौल-साहित्य का प्रभाव है गुरु गोरखनाथ तथा उनके शिष्यों की वाणी पर पतंजलि के योगशास्त्र तथा आगमन साहित्य प्रभाव पड़ा है।

Scanned with CamScanner